इकाई 3 मेजी पुनर्स्थापना और आधुनिक जापान का निर्माण

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 'काले जहाजों' का आगमन

3.3 व्हेल का शिकार और जापान का खुलना

3.4 पश्चिमी माँगों के प्रति बाकुफू और दाइम्यों की प्रतिक्रियाएँ

3.5 पेरी का आगमन

3.6 मेजी पुनर्स्थापना की दिशा में कदम

3.7 जापान में आंग्ल-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता

3.8 आर्थिक समस्याएँ और विदेशी विरोधी भावनाएँ

3.9 मेजी पुनर्स्थापना

3.10 1868 का महत्व

3.11 मेजी पुनर्स्थापना पर विद्वानों के दृष्टिकोण

3.12 कुछ जापानी मत

3.13 द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विद्वता

3.14 एक वैश्विक संदर्भ में मेजी पुनर्स्थापना

3.15 लोगों को बचाने से उन्हें राज्य की सेवा के लिए लामबंद करने तक

3.16 सारांश

3.17 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप निम्नलिखित के बारे में जानेंगे :

- यूरोपीय शक्तियों के हस्तक्षेप से पुराने राज्य के समक्ष उठी समस्याएँ,
- 1868 में मेजी शासन की पुनर्स्थापना, तथा
- मेजी पुनर्स्थापना की आधुनिक जापान के निर्माण में भूमिका।

3.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम देखेंगे कि कैसे रूस, ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी पश्चिमी शक्तियों ने तोकुगावा जापान के साथ राजनयिक सम्बंध स्थापित करने का प्रयास किया। इन प्रयासों का शुरू में प्रतिरोध किया गया था, लेकिन जल्द ही तोकुगावा शासन इनके प्रति नरम पड़ गया और उसने संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन और अन्य यूरोपीय शक्तियों के साथ व्यापार और राजनयिक सम्बंधों के लिए बातचीत की। साम्राज्यवादी घुसपैठ के कारण सरकार के वैकल्पिक प्रतिरूपों के बारे में विवाद शुरू हुआ और अंततः

सत्सुमा और चोशु के नेतृत्व में एक गठबंधन ने तोकुगावा बाकुफू को उखाड़ फेंका और 1868 में मेजी पुनर्स्थापना को अंजाम दिया। विद्वानों की राय इस पर बंटी हुई है कि इस अवधि को कैसे देखा जाए और उनका मेजी पुनर्स्थापना का विश्लेषण भी भिन्न-भिन्न है लेकिन इस बात पर सहमति है कि इसने आधुनिक जापान की शुरुआत को चिह्नित किया।

3.2 'काले जहाजों' का आगमन

तोकुगावा समाज, अपनी गतिशीलता के बावजूद, यूरोप में होने वाले विकासों से कटा हुआ था और जब विदेशी जहाज आने लगे और जापानी बंदरगाहों तक पहुँचने की माँग करने लगे तो इसके लिए एक गंभीर समस्या उठ खड़ी हुई। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान जापान की सैन्य क्षमताएँ पुर्तगालियों या अंग्रेज़ों की सैनिक क्षमताओं से बहुत भिन्न नहीं थी, लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी तक यूरोपीय राष्ट्र इतने विकसित हो चुके थे कि जापान में उसकी कल्पना भी नहीं हो सकती थी। तोकुगावा काल में यूरोप का मुख्य मतलब हॉलैंड और पुर्तगाल था। यह केवल इस अवधि के अंत में था जब उन्होंने ग्रेट ब्रिटेन और उसके साम्राज्य, भारत के औपनिवेशीकरण और संयुक्त राज्य अमेरिका के बारे में जानना शुरू किया। उन्नीसवीं शताब्दी में पश्चिमी देशों के सम्पर्क ने तोकुगावा के लिए नयी समस्याएँ खड़ी कर दी थी और वह इनसे निपटने के लिए तैयार नहीं था। इस अवधि में इस क्षेत्र के अन्य देशों के समान सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक जापान ने भी पश्चिमी साम्राज्यवादी खतरों से निपटने और आधुनिक विश्व की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने समाज और सरकार को प्रतिबंधित करना पड़ा।

1853 में कॉमोडोर मैथ्यु पेरी एक नौ-सैनिक बेड़े के साथ आया। उसके जहाजों को काले जहाज कहा जाता था क्योंकि जहाज के तख्तों के बीच की दरार को बंद करने के लिए कोलतार का इस्तेमाल किया जाता था। अगले ही वर्ष एक मैत्री और सद्भाव की संधि पर हस्ताक्षर किये गये। यह एक प्रकार से पहले से शुरू हो चुकी प्रक्रिया का समापन था। रूसी और ब्रिटिश सत्रहवीं शताब्दी से जापान के तट पर दबाव बना रहे थे। रूसियों ने स्वयं को ओखोत्स्क (Okhotske) सागर में स्थापित कर लिया था और यहाँ से उन्होंने अपने खोजी अभियान शुरू किये। 1739 में एक रूसी खोजकर्ता स्पानगबर्ग ने जापान के लिए एक रास्ता खोजा। उसके बाद जापान के द्वार खोलने और उसके साथ सम्बंध स्थापित करने के गंभीर प्रयास हुए। 1792 में लेफ्टिनेंट एड्म लेक्समैन (1766-1806), इदो (आधुनिक होक्काइडो) में पहुँचे लेकिन उन्हें प्रवेश की अनुमति नहीं दी गई और वे खुले व्यापार के लिए किसी भी रियायत को प्राप्त करने में असफल रहे। अगला रूसी दूत नागासाकी गया, जो एक अकेला ऐसा बंदरगाह था जहाँ विदेशियों को आने की छूट थी लेकिन जापानी विदेशी व्यापार में रूसी रुचि नहीं रखते थे। 1806 और 1807 में रूसियों ने सखालिन और कुरील द्वीप समूह में जापानी चौकियों पर छापे मारे, जिसके कारण दोनों देशों के बीच तनाव और टकराव के हालात बन गए।

अंग्रेज़ क्षेत्र को सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ से तलाशने का प्रयास कर रहे थे। कैप्टन कुक 1793 में अपनी मृत्यु के समय जापान जाने की योजना बना रहे थे। 1793 में चीन में अर्ल जार्ज मैकारटनी (1737-1806) के नेतृत्व में जाने वाला दूतावास भी जापान जाने में असफल रहा, हालांकि मैकारटनी के पास जापान के सम्राट के लिए पत्र थे। वह बाद में मद्रास के गवर्नर थे और उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के अफीम व्यापार का विरोध किया। 1797 में एक अंग्रेज़ी जहाज होक्काइडो गया और 1808 में जंगी जहाज फैटन ने नाकासाकी में प्रवेश किया।

3.3 व्हेल का शिकार और जापान का खुलना

उन्नीसवीं शताब्दी में व्हेल का शिकार अमेरिका का पाँचवां सबसे बड़ा उद्योग था और प्रशांत सागर के आर-पार जाने वाले व्हेल का शिकार करने वाले जहाजों को ईंधन भरने और आपूर्ति के लिए सुरक्षित बंदरगाहों की आवश्यकता थी। साथ ही साथ चीन के बाजार के आकर्षण ने जापानी बंदरगाहों को विदेशी व्यापार के लिए खोलने में अमेरिका ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू कर दी थी। लेखक हरमन मेलविल ने मोबी डिक (1851) नाम के उपन्यास में व्हेल के शिकारियों की दुनिया का चित्रण किया है और वह लिखते हैं कि अगर दोहरी चिटखनी वाला जापान कभी खुलेगा तो वह व्हेल के जहाजों के कारण होगा। 1840 के दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चिमी विस्तार ने, 'प्रत्यक्ष नियति' के विचारों को हवा दी कि यह श्वेत अमेरिकियों की देशी आबादियों के ऊपर शासन करने की नियति थी। इसने अमेरिकी व्यापारियों को चीन में पहुँचने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित किया लेकिन यह निरर्थक साबित हुआ और सरकार जापान में अधिक रुचि लेने लगी। 1835 से राजनयिक व्यवस्था बनाने के प्रयास किए गए। 1846 में कॉमोडोर बिड़ल इदो की खाड़ी में आए लेकिन उन्हें प्रवेश की अनुमति नहीं मिली। बाद में 1849 में कमांडर गलिन नागासाकी आए लेकिन उन्होंने व्यापार को आगे बढ़ाने को कोई व्यवस्था नहीं की।

3.4 पश्चिमी माँगों के प्रति बाकुफू और दाइम्यों की प्रतिक्रियाएँ

पश्चिमी शक्तियों के साथ राजनयिक और वाणिज्यिक सम्बंधों को सम्पन्न करने के लिए जापान पर बनाए जा रहे दबाव ने बाकुफू को एक कठिन स्थिति में डाल दिया। रूसी जहाजों के आने के बाद की शुरुआती प्रतिक्रिया व्यापार और बंदरगाहों के खोलने को मज़बूती से खारिज करने की थी। 1806 में स्थानीय अधिकारियों को एक आदेश जारी किया गया कि वे विदेशियों को बाहर रखें और 1825 में अधिकारियों से कहा गया कि तट के पास आने वाले किसी भी जहाज को नष्ट कर दें। यह सिर्फ अज्ञात लोगों से डर वाला विदेशी वाद-विवाद पर आधारित नहीं था। यह एक जटिल समस्या की प्रतिक्रिया थी। एक तरफ जापान के पास पश्चिमी देशों को बाहर रखने के लिए स्पष्ट रूप से सैन्य क्षमता की कमी थी, लेकिन दूसरी ओर अधिकांश समूह इस बात पर अड़े थे कि इन माँगों के लिए कोई रियायत नहीं होनी चाहिए।

हालांकि, 1842 में जब जापानियों को अफीम युद्ध में छिंग की हार की जानकारी डच लोगों से मिली, तो उन्होंने अपनी नीति को नर्म कर दिया और सहायता की ज़रूरत वाले विदेशी जहाजों को प्रवेश की अनुमति दे दी। बाद में, ब्रिटिश और फ्रांसीसी जहाजों ने व्यापारिक सौदों पर बातचीत करने के लिए बंदरगाहों का दौरा किया, हालांकि वे इसमें विफल रहे। हालांकि, उनपर तोपें नहीं दागी गईं जो एक नर्म रुख को दर्शाता था। बाकुफू ने अब तटीय रक्षा के निर्माण पर काम करना शुरू कर दिया और विदेशी शक्तियों से निपटने के लिए एक तुष्टिकरण की नीति अपनाई।

3.5 पेरी का आगमन

1853 में कोमोडोर मैम्यू पेरी दो भाप से चलने वाले जंगी जहाजों और दो अन्य छोटे पोतों के साथ चीन और ओकिनावा होते हुए जापान आया। जुलाई 1853 में बंदरगाहों को खोलने की माँग और कोयले की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उसने इदो की खाड़ी में प्रवेश किया। पेरी अमेरिका के राष्ट्रपति का एक पत्र साथ लाया था। पेरी ने जिस उद्दंडता का व्यवहार किया और जिसके लिए उसके पास पर्याप्त बेहतर सैन्य शक्ति का समर्थन था,

उससे तोकुगावा बाकुफू की पश्चिमी राष्ट्रों की ताकत से प्रभावी ढंग से निपटने की अक्षमता व्यक्त होती है। 1854 के बसंत में बाकुफू ने एक मित्रता और वाणिज्य संधि पर हस्ताक्षर किये। इस संधि ने शिमोदा और हकोदाते के बंदरगाह खोल दिए जहाँ अमेरिकी जहाज अपने जहाजों के लिए ईंधन और दूसरा साजो-सामान ले सकते थे। इस संधि में एक सबसे अधिक अनुग्रह प्राप्त राष्ट्र का प्रावधान था जिसके तहत किसी ओर देश को मिलने वाले लाभ अपने आप अमेरिका को मिल जाने थे। अमेरिका को शिमोदा में एक वाणिज्य दूत प्रतिनिधि रखने की भी छूट मिल गई। यह संधि एक शुरुआत ही थी, क्योंकि खोले जाने वाले बंदरगाह छोटे और दूर-दराज स्थित थे, लेकिन यह बाकुफू की पहले की पृथक्कता की नीति से हटकर था।

पेरी ने जब अपनी संधि की तब रूसी भी सक्रिय थे। येवफिमी पुत्यातिन (1803-1883) एक संधि करने और होक्काईडो के उत्तर में सीमा निश्चित करने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। अक्टूबर में बाकुफू ने अंग्रेज़ों के साथ और फिर रूस के साथ एक समान संधि की जिसमें नागासाकी को भी खोल दिया गया। 1855 में डचों ने भी जापानियों के साथ एक संधि की।

अमेरिकी ने अपने वाणिज्य दूत की हैसियत से टाउनसेंड हैरिस को 1856 में शिमोदा में रहने के लिए भेजा। यहाँ उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन उसने धैर्य और युक्ति के साथ बाकुफू को समझा ही लिया कि अमेरिका के साथ संधि करके वे फायदे में ही रहेंगे, नहीं तो उन्हें दूसरी पश्चिमी शक्तियों के साथ और भी दूभर संधियाँ करनी पड़ेगी। 29 जुलाई 1558 को हुई हैरिस संधि ने कानागावा और नागासाकी के बंदरगाहों को और अगले चरणों में निगाता और हयोगो को, खोल दिया। विदेशियों को ओसाका और इदो में रहने की छूट मिल गई और उन्हें अतिरिक्त क्षेत्रीयता के (extra-territorial) के विशेष अधिकार भी मिले। अंत में, दोनों देशों के प्रतिनिधियों की अदला-बदली का प्रावधान संधि में था। इसी तरह की संधियाँ अन्य राष्ट्रों के साथ सम्पन्न हुई। बंदरगाहों को खोलने के अलावा, जापानियों ने एक बड़ी रियायत यह दी कि उन्होंने आयात और सीमा-शुल्क की दरों को बहुत नीचा रखा।

3.6 मेजी पुनर्स्थापना की दिशा में कदम

सन् 1853 और उसके बाद के काल को जब कॉमोडोर पेरी ने जापान की धरती पर कदम रखा, तीन उप-कालों में बांटा जा सकता है :

1853-1858 का दौर

इस दौर में बाकुफू ने बंदरगाहों को खोलने की विदेशी माँगों को कम से कम करने का प्रयास किया। बाकुफू अधिकारी, आबे मसाहीरो (1819-1857), ने तर्क दिया कि पेरी की संधि की माँगों को अस्वीकार करने से युद्ध का खतरा बनेगा, जबकि इसे स्वीकार करने से उन्हें इतनी मोहलत मिल जाएगी कि वे अपने आपको मज़बूत कर लें। बाकुफू की दृष्टि में असल खतरा व्यापार को लेकर नहीं था बल्कि सामाजिक अव्यवस्था का डर था। विदेशी घुसपैठ राजधानी इदो को और विशेष तौर पर क्योतो की शाही राजधानी को खतरे में डालने वाली थी। जैसा कि एक बाकुफू अधिकारी ने यह तर्क देते हुए लिखा, कि विदेशियों को ''शाही महल, पवित्र स्थलों और निजी जागीरों'' से दूर रखने के लिए योकोहामा को खोल दिया जाना चाहिए जिससे कम से कम रियायतें देकर स्वाभाविक व्यवस्था की रक्षा की जा सके।

बाकुफू के मुख्य अधिकारी, होता मासायोशी (1810-1864) ने काईकोकू अर्थात् खुले देश के विचार को आगे रखा। उसने तर्क किया कि नयी स्थितियों में दूसरे देशों के साथ व्यापार और मैत्री सम्बंध महत्वपूर्ण थे और आवश्यक भी। जापान के लिए आवश्यक था कि वह अपनी पृथक्कता नीति पर फिर से विचार करें क्योंकि ''सैनिक शक्ति हमेशा राष्ट्रीय सम्पदा से आती है और देश को सम्पन्न करने के साधन मुख्य तौर पर व्यापार और वाणिज्य में मिलते हैं''। यह शासन तंत्र के लिए एक नया तर्क था, क्योंकि अभी तक तो परम्परा से चले आ रहे ज्ञान ने केवल कृषि को ही सम्पदा का मूल माना था और सौदागारों पर नाक-भों सिकोड़ी थी।

होत्ता एक नयी पेशकश कर रहा था। लेकिन वह अभी भी विदेशियों को दूर रखने के पुराने स्वप्न से बंधा था। उसकी पेशकश यह थी कि जापानी बाहर निकलकर इस सम्पदा को हासिल करें लेकिन इस तरह के तर्कों में अभी भी विदेशियों के लिए जापान में आवास के अधिकार के लिए कोई जगह नहीं थी।

बाकुफू ने 1958 में संधियाँ की जिनमें योकोहामा में व्यापार की अनुमति दी गई और 1859 से इदो में विदेशियों को आवास की अनुमति दी गई। इन कार्यवाहियों से विरोधी आंदोलनों को बढ़ावा मिला और ''सम्राट का आदर करो, बर्बरों को निकाल बाहर करो'' (सोन्नो जोई) आंदोलन ने, विशेष तौर पर उस समय जोर पकड़ लिया जब एक राजभक्त ने एक बाकुफू अधिकारी ली नाओसुके (1815-1860) की हत्या कर दी।

1860-1864 का दौर

सन् 1860 के दौरान और 1863 में सम्राट को फिर से स्थापित करने का एक असफल प्रयास हुआ। इस तेजी से बदलते राजनीतिक भागीदारी के आधार को व्यापक करने के और भी प्रयास हुए। जिन दाइम्यों को सत्ता से और निर्णय लेने वाली परिषदों से बाहर रखा गया था, उन्होंने बाकुफू की कमजोरी का उपयोग कर अपनी भूमिका और शक्ति को बढ़ाने की कोशिश की। इस तरह की एक कोशिश दरबार और शोगुन (कोबुगत्ताई) की दोस्ती थी। इसका उद्देश्य सामंतों और सैमुराई के उच्चस्तरीय सदस्यों को एक साथ लाकर राष्ट्रीय एकता के लिए साथ-साथ काम करना था। यह प्रयास भी असफल ही रहा, लेकिन गृह-युद्ध का खतरा टल गया। फिलहाल यह प्रश्न राजनीतिक पात्रों के दिमाग में हर समय बना हुआ था कि विदेशी आंतरिक फूट का लाभ उठायेंगे। 1860 के दशक में भी विदेशियों को क्योतो की शाही राजधानी के आसपास के क्षेत्र (किनाई) से बाहर ही रखा गया और इसकी प्रतिरक्षा के लिए कदम उठाए गये।

सन् 1864 में बाकुफू ने क्योतो में विदेशियों के प्रवेश देने के बजाए उन्हें हरजाना देने को ही सहमति प्रदान की और 1865 में दरबार ने संधियों का अनुमोदन तो कर दिया, लेकिन ह्योगों में विदेशियों को प्रवेश की अनुमति देने से इंकार कर दिया जबकि संधि में इस बात पर सहमति हुई थी। बाकुफू को इस प्रावधान के एवज में एक विनाशकारी शुल्क दर स्वीकार करनी पड़ी। चोशु और सत्सुमा के हान पर हुई बमबारी ने एक स्पष्ट सबक दिया जिसमें विदेशियों को जबरन निकालने और उन्हें सीमित रियायतें देने, इन दोनों ही नीतियों की निरथर्कता सामने आ गई। 1865 तक यह स्पष्ट हो चुका था कि सकोकू या बंद देश चल नहीं सकता। यह ध्यान देना चाहिए कि 'सकोकू' या बंद देश शब्द का उपयोग केवल 1801 में सत्रहवीं शताब्दी में जापान में एक जर्मन पुस्तक के अनुवाद में किया गया था।

1865-1868 का दौर

यह काल एक खुले देश की नीति की विजय और नयी व्यवस्था को स्वीकारने के लिए उल्लेखनीय है। बाकुफू ने 1867 में लंदन और पेरिस में सरकारी दूत भेजे और उससे भी पहले एक अधिकारी इकेदा नागासाकी ने यूरोप का दौरा करने के बाद लिखा कि ''राष्ट्रीय स्वाधीनता की नींव रखने के लिए यह मूल बात है कि जापान के भीतर राष्ट्रीय एकता हासिल की जाए''। उसने सलाह दी कि यह आवश्यक था कि जापानी संधियाँ करें और यात्रा करें, जानकारी एकत्र करें और पश्चिमी देशों का अध्ययन करें। इस बदली स्थिति में, ''शोगुन'' योशिनोबू यह लिख सका : ''अगर हम, ऐसे समय में, केवल पुरानी पड़ चुकी रीतियों से चिपटे रहते हैं, और सभी देशों में आम अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों से बचकर रहते हैं तो हमारा व्यवहार स्वाभाविक व्यवस्था के प्रतिकूल होगा।'' ऐसे वक्तव्य इससे पहले के समय में नहीं दिए जा सकते थे। उनमें जापानियों के बौद्धिक बदलाव का स्पष्ट संकेत मिलता है। बेशक उनके विचार परिस्थितियों के दबाव में आ कर बदले थे लेकिन जो चुनाव उन्होंने किया वह एक नयी स्थिति के प्रति उनकी रचनात्मक प्रतिक्रिया का एक अंग था।

3.7 जापान में आंग्ल-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता

अब तक तो यह जापान और विदेशियों का मसला था, लेकिन जल्दी ही आंग्ल-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता ने जापानी मामलों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। इस स्थिति में फ्रांसीसी बाकुफू की और आकर्षित हुए और अंग्रेज़ों ने सत्सुमा और चोशु का समर्थन किया। फ्रांसीसी सम्बंध 1864 में शुरू हुआ जब एक बाकुफू अधिकारी को पेरिस भेजा गया और लियॉन रोशे (1809-1901) जापान आये। फ्रांसीसी सम्बंध 1864 में शुरू हुआ जब एक बाकुफू अधिकारी को पेरिस भेजा गया और लियॉन रोशे (1809-1901) जापान आए। फ्रांसीसियों ने दूसरी पश्चिमी ताकतों के साथ मिलकर काम करने के बजाय एक स्वाधीन फ्रांसीसी नीति का पालन करना शुरू किया। उन्होंने विदेशियों पर जापानी हमलों पर सख्त प्रतिक्रिया का समर्थन किया और योकोसुका में एक शस्त्रागार बनाने के लिए ऋण देने का निर्णय लिया गया और एक मिली-जुली, फ्रांसीसी-बाकुफू कंपनी बनाने का भी विचार किया गया।

इसी तरह, अंग्रेज भी धीरे-धीरे हान को समर्थन देने की ओर बढ़ रहे थे। 1866 में ब्रिटिश लिगेशन के एक अधिकारी अर्नेस्ट सैटो ने कई लेखों का जापानी में अनुवाद किया। ये लेख उसने विदेशियों से यह आग्रह करते हुए लिखे थे कि वे जापान को दाइम्यों के संग्रह के रूप में नहीं, बल्कि एक अलग सत्ता के रूप में लें। जापान धीरे-धीरे आंग्ल-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता में उलझ गया और साम्राज्यवादी घुसपैठ का खतरा तेजी से भयंकर रूप धारण करने लगा। बाकुफू और फ्रांस तथा ब्रिटेन और सत्सुमा-चोशु के एक-दूसरे से जुड़ने के गंभीर आंतरिक परिणाम हुए। एक ओर दाइम्यों बाकुफू के खिलाफ मज़बूत हो गए, लेकिन आपसी संदेह भी बढ़ा और मेल-मिलाप के प्रयास कठिन हो गए। अंत में, पश्चिमी सैन्य प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण पर बाकुफू और दाइम्यों दोनों की निर्भरता बढ़ गई।

चोशु के खिलाफ लड़ाई से विदेशी ताकतें अपने आपको व्यापार में और अधिक शामिल करने में सफल रहीं, इनमें विभिन्न गुटों को बंदूकें देने का मामला विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। कभी-कभी तो भय निराधार होता था, लेकिन ऐसी कई अफवाहें थी कि दाइम्यों को आर्थिक और सैन्य सहायता मिल रही थी। बाकुफू के एक अधिकारी कत्सु कैशु ने इंग्लैंड को एक ''भूखा चीता'' बताया और यह चेतावनी दी कि बाकुफू को फ्रांस से भी पैसा उधार नहीं लेना चाहिए, क्योंकि फ्रांस एक ''भूखा भेड़िया'' था।

विदेशियों की जापान के अंदर यात्रा और मिशनरी गतिविधियाँ भी समस्या खड़ी कर रहे थे। 1867 तक केवल राजनयिक ही नहीं, बल्कि तकनीशियन और मिशनरी भी जापानी क्षेत्रों में

आवाजाही करने लगे थे। हयोगो और ओसाका के खुलने के बाद यह आवाजाही बढ़ गई और बकुफू ने निर्देश जारी कर विदेशियों को नारा में आने, यात्रा करने और ''ईदो और ओसाका में थियेटर और रेस्तरां'' में प्रवेश की अनुमति दे दी। इससे हिंसा की घटनाएँ हुईं क्योंकि जनता अभी भी विदेशियों के जापान में घुसने को स्वीकार नहीं कर पाई थी। विदेशियों पर आक्रमण की घटनाएँ बढ़ गईं और इससे हर्जाने की माँगे भी और बढ़ गई।

जापान के खोले जाने का यह मतलब नहीं था कि ईसाई धर्म को भी आने की अनुमति होगी। इसलिए धर्म-पाबंदी जारी रही। फिर भी, विदेशियों की रिहायश बढ़ने के साथ ईसाई धर्म के पालन की संधिगत बंदरगाहों में अनुमति दे दी गई। मिशनरी आने लगे और पाबंदी के बावजूद उन्होंने अपने धर्म-प्रसार के लिए कदम उठाए। फ्रांसीसी मिशनरियों ने 1865 में नागासाकी में एक चर्च शुरू किया था और उन्होंने जापानियों को उसमें आने की अनुमति दे दी और ये जापानी खुलेआम इस धर्म को मानने लगे। एक जापानी अधिकारी ने फ्रांसीसी प्रतिनिधि लियों रोशे से लिखकर शिकायत की कि मिशनरी गाँवों में प्रचार कर रहे थे, लोगों के घरों में रह रहे थे, सोना-चाँदी इकट्ठा कर रहे थे और उनकी गतिविधियाँ अव्यवस्था फैलाने वाली थी, इसलिए उन्हें रोका जाना चाहिए। इन समस्याओं से न केवल बाकुफू और विदेशियों के बीच, बल्कि स्थानीय लोगों और विदेशियों तथा बाकुफू के बीच भी तनाव की स्थितियाँ बनी और पहले से ही जटिल समस्या और भी खराब हो गई।

3.8 आर्थिक समस्याएँ और विदेशी विरोधी भावनाएँ

सन् 1857 तक विदेशी ताकतें आंतरिक प्रतिद्वंद्विताओं में गहरे तौर पर शामिल हो चुकी थी और इससे जापान के लिए एक खतरनाक स्थिति हो गई जिसमें इस बात की बहुत सम्भावना थी कि वह उपनिवेशवाद का शिकार हो जाता। संधियों और विदेशी व्यापार के प्रवेश का आर्थिक असर अव्यवस्थित करने वाला रहा था। सूती कपड़े जैसे सस्ते बने सामान से प्राचीन काल से चला आ रहा स्वदेशी उद्योग बिगड़ रहा था। विशेष तौर पर जापान में अनुकूल सोना-चाँदी विनिमय का इस्तेमाल विदेशी व्यापारियों ने जिस तरह किया, उसके असर विनाशकारी हुए। जापान में सोना-चाँदी विनिमय 6:1 था जबकि शेष विश्व में यह 15:1 था। व्यापारी अपने साथ चाँदी लाते थे और सस्ते में सोना खरीद लेते थे जिसे निर्यात करके वे भारी मुनाफा कमाते थे। मसालों के भारी निर्यात और चाँदी की अत्यधिक भरमार से जापानी अर्थव्यवस्था लड़खड़ा गई और इससे जनता को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ा। अनेक किसान विद्रोह और शहरी अशांति की स्थितियाँ उस तनाव को दिखाती हैं जिससे होकर जापानी अर्थव्यवस्था और समाज गुजर रहा था।

बाकुफू के अंत के वर्षों के इतिहास को इस तरह के अवधि के रूप में देखने की बजाय कि जब दो स्थिर दृष्टिकोणों ने एक-दूसरे को सामना किया, यह अधिक फलदायी होगा कि उन्हें इस तरह के साधनों के रूप में देखा जाए जिसके माध्यम से विचारकों और नीति निर्माताओं ने कुछ सामाजिक आदर्शों को प्राप्त करने की कोशिश की। जैसा कि हमने देखा है कि तोकुगावा जापान वास्तव में ''बंद'' नहीं था, व्यापार और राजनयिक सम्बंध सरकारी नीतियों के महत्वपूर्ण पहलू थे। उन्नीसवीं शताब्दी में जब साम्राज्यवादी शक्तियों ने शासकों पर व्यापार खोलने के लिए दबाव बनाया तब इस खतरे से कैसे निपटा जाए यह एक प्रमुख चिंता का विषय बन गया।

इस संदर्भ में विदेशवाद विरोध एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया। अब बहस इस सवाल पर केंद्रित थी कि विदेशी खतरे से कैसे निपटा जाए। विदेशियों से कैसे निपटा जाए यह बहस इस संदर्भ में हुई कि राज्य और इसकी क्षमताओं को कैसे मज़बूत किया जाए। प्रारंभिक उपायों में बेहतर तटीय रक्षा, बेहतर हथियार और सैनिकों के लिए आधुनिक प्रशिक्षण और

स्थानीय स्तर पर हथियारों का उत्पादन शामिल था। बात यहीं पर नहीं रुकी। एक अलग तरह के राजनैतिक संगठन की आवश्यकता, उद्योग और विज्ञान को प्रोत्साहित करने और धार्मिक व्यवस्था को सुधारने की ज़रूरत गंभीरता से महसूस की गई और उस पर बहस हुई।

यह विचार शाही घराने को केंद्र में रखकर एक नये राज्य के निर्माण के प्रयास के इर्द-गिर्द एक साथ जुड़ गए। सम्राट एक साझा सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के प्रतीक के प्रतिनिधि बनकर सामने आए। यह परिवर्तन बौद्धिक और आर्थिक परिवर्तनों द्वारा समर्थित था जिन्होंने विदेशी सम्बंधों में नीतिगत निर्णय लेने में सामूहिक भागीदारी के स्तर को बढ़ाया।

बोध प्रश्न 1

1) पश्चिमी हस्तक्षेप के प्रति बाकुफू की शुरुआती प्रतिक्रिया क्या थी?

.....

.....

.....

.....

.....

2) जापान में उन्नीसवीं सदी में आंग्ल-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.9 मेजी पुनर्स्थापना

सन् 1868 में बाकुफू से सम्राट के हाथों में सत्ता की वापसी मेजी पुनर्स्थापना की विशेष घटना थी। 1868 में सत्ता का बाकुफू से सम्राट को वापिस मिलना मेजी पुनर्स्थापना की ओर संकेत देता है। यह सत्सुमा और चोशु के नेतृत्व में, दो बाहरी दाइम्यों के एक गठबंधन द्वारा किया गया। शाही आदेश-पत्र के द्वारा जनवरी, 1868 में तोकुगावा योनिनुबू (मौलिक नाम कीकी 1866-67) से शासन किया) का पद त्याग घोषित किया था। यह तोकुगावा के लम्बे शासन की औपचारिक समाप्ति की ओर संकेत करता है। अप्रैल में राजदरबार ने शपथ घोषणापत्र जारी किया जिसमें नई सरकार की नीतियाँ निहित थी। अक्टूबर 1868 में सम्राट ने चीनी ''अक्षरों'' का चयन किया जिनका अर्थ ''प्रबुद्ध'' शासन या मेजी था तथा जिस नाम से उसका शासनकाल (1868-1912) जाना जाता है।

पुनर्स्थापना या इशिन के नाम से यह घटना जानी जाती है। इसमें कुलीन वर्ग (अभिजात-वर्ग) के कुछ तबके तथा विशेष तौर पर सत्सुमा, चोशु, हिजेन तथा तोसा के हान ने भाग लिया। उन सैमुराई तथा ग्रामीण समृद्ध तबकों ने भी इसको समर्थन दिया जिन्हें तोकुगावा तंत्र के प्रतिबंध खलते थे। यह गुट बाकुफू की सत्ता में भागीदारी चाहते थे। जब विदेशी दबाव के

फलस्वरूप बाकुफू अपने को कायम रखने में सफल रहा तो इन गुटों ने राजनीति में हस्तक्षेप करके उसे प्रभावित करना चाहा। विदेशियों की संधि-बंदरगाहों को खोलने की माँग तथा बाकुफू की दुविधा ने इन गुटों को शाही दरबार को समर्थन देने के लिए तथा तोकुगावा द्वारा सम्राट को सत्ता वापिस करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस माँग का राजभक्तों ने भी समर्थन किया जो कि सचमुच एक सक्रिय शाही दरबार चाहते थे। सत्सुमा तथा चोशु हान, जो कि अपने-अपने गुटों का नेतृत्व कर रहे थीं, के बीच शुरू में कटु सम्बंध रहे परंतु बाद में, इन दोनों ने मिलकर तोकुगावा बाकुफू का तख्ता पलट दिया।

1854 में कनागावा की संधि पर हस्ताक्षर हुए तथा 1859 तक जापान के विदेशी सम्बंध असमान संधियों के आधार पर निर्धारित हो गए, जैसा कि चीन में भी हुआ। संधि बंदरगाहों को खोलने के दबाव (कनागावा, नागासाकी, हयोगो, निगाता) ने ऐसे संकट को जन्म दिया जिसमें तोकुगावा के आलोचक एकजुट हो गए। उदाहरण के तौर पर तोकुगावा गुट के रूढ़िवादी जो कि संधियों से सहमत नहीं थे क्योतो के अभिजात वर्ग के साथ मिल गए तथा उन्होंने बाकुफू को सुधारने की चेष्टा की। सत्सुमा तथा चोशु ने प्रमुख भूमिका निभाई क्योंकि वे ''बाहर के सामंत'' थे (उन्हें 1600 में तोकुगावा हरा चुका था) तथा सत्ता में उनकी भागीदारी नहीं थी। उनके हान तोकुगावा क्षेत्रों से बहुत दूर थे तथा उनका इलाका एकीकृत था। इन हान में आंतरिक सुधार की कोशिश भी सम्भव हो सकी तथा वे उन ताकतों को भी जुटा पाए जो तोकुगावा का विरोध कर सकती थी।

3.10 1868 का महत्व

1868 का राजनैतिक परिवर्तन एक कदम ही था, हालांकि यह एक प्रमुख कदम था। नई सरकार एक स्पष्ट एजेंडा के साथ शुरू नहीं हुई थी, लेकिन बहस और प्रयोगों के माध्यम से उन्होंने 1890 तक एक आधुनिक संवैधानिक राजतंत्र का निर्माण किया। ऐसे विभिन्न आंदोलन थे जो सरकार के वैकल्पिक रूपों की खोज को दर्शाते थे। इनके उपलब्ध एक प्रमुख प्रारूप दाइम्यों शासित हान का पुनर्निर्माण करना था। कई हानों ने अपने वित्त को मज़बूत करने, अपने प्रशासन के पुनर्गठन करने और यहाँ तक कि आधुनिक तरीकों से प्रशिक्षित एक सेना का निर्माण करने के लिए सुधार शुरू कर दिया था। उदाहरण के लिए, चोशु और कियाई के हान में, उन्होंने अपने सैनिकों को प्रशिक्षित करने के लिए विदेशियों को काम पर रखा था। कियाई में एक नागरिक सेना जो किसानों और भिक्षुओं से बनी थी, बनाई गई और इस प्रकार उसने हथियार धारण करने के समुराई और एकाधिकार को तोड़ दिया था।

दूसरा प्रारूप हियान काल में शासन के ''रित्सूर्यो'' (ritsuryo) व्यवस्था को अपनाने का था। यह जापानी संस्कृति के केंद्र में सम्राट को रखने वाले बौद्धिक आंदोलनों द्वारा समर्थित था। तीसरा पश्चिमी देशों द्वारा उपलब्ध कराए गए प्रारूप थे। जापानी इन देशों का अध्ययन कर रहे थे और बाकुफू ने पश्चिम का अध्ययन करने के लिए दूत भेजने शुरू कर दिए थे। ये दूत उन विचारों के साथ वापस आए जिनका उपयोग नई नीतियों के निर्माण करने के लिए किया गया था। विद्वानों ने पाया है कि बहुत-सी संस्थाएँ जिनको पारम्परिक माना जाता था, उन्हें वास्तव में इसी अवधि में निर्मित किया गया था। शाही घराना निस्संदेह एक पुरानी संस्था थी लेकिन उसे पश्चिमी तर्ज पर फिर से नया आकार दिया गया था। यहाँ तक कि जिस तरह से कपड़े सम्राट ने पहने वह एक यूरोपीय सम्राट की वेशभूषा के सदृश दिखते थे।

3.11 मेजी पुनर्स्थापना पर विद्वानों के दृष्टिकोण

सन् 1868 की घटनाएँ पुनर्स्थापना की ओर संकेत करती हैं या क्रांति की ओर? इन सवालों पर विद्वानों में अभी भी बहस चल रही है। उदाहरण के लिए, तेत्सुओ नाजिता लिखते हैं कि ''जापानी सम्राट के पास कोई विशिष्ट ढाँचा नहीं था जिसकी पुनर्स्थापना होती और इशिन (पुनर्स्थापना) के बाद उसके साथ जो भी भव्य छवियाँ जुड़ी, वे हाल के इतिहास की विरासत नहीं बल्कि आधुनिक राज्य के वैचारिक निर्माण का परिणाम थी''। 1867 और 1868 की घटनाएँ महाप्रलय किस्म की घटनाएँ नहीं थीं और केवल इसी दौर पर विचार किया जाए तो तोकुगावा से मेजी पुनर्स्थापना की ओर संक्रमण आसान और बहुत कम द्वंद्व वाला दिखाई देता है। लेकिन अगर इस पर उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत से विचार किया जाए तो यह देखा जा सकता है कि जो बदलाव लाए गए थे उन्होंने जापान को बहुत बदल डाला और एक नये राष्ट्र-राज्य का निर्माण किया। इस संक्रमण के प्रति दृष्टिकोण को लेखकों और उनके समय की चिंताओं ने प्रभावित किया है।

3.12 कुछ जापानी मत

एक जाने-माने मेजी बुद्धिजीवी, तुकोतोमी सोहो (1863-1957) ने यह तर्क दिया था कि आधुनिक जापान के निर्माण में मदद मेजी नेताओं ने नहीं बल्कि उस समय की परिस्थितियों ने दी। उनकी दृष्टि में सामंतवादी जापान पहले से ही कमजोर हो रहा था और उन ग्रामीण नेताओं का उदय हो रहा था, जिनकी शक्ति का आधार एक उत्पादक और सम्पन्न अर्थव्यवस्था थी, लेकिन जिन्हें राजनीतिक सत्ता से वंचित रखा गया था। दूसरे, बुद्धिजीवियों का तर्क था कि शाही राजभक्ति की ताकतें पुनर्स्थापना के लिए उत्तरदायी थी। इन बुद्धिजीवियों में अंतिम तोकुगावा शोगुन योशीनोबु भी शामिल है जिन्होंने 1915 में अपने संस्मरण लिखे।

1920 के दशक में मेजी पुनर्स्थापना का एक अत्यंत प्रभावशाली विश्लेषण मार्क्सवादियों द्वारा किया गया। उस समय आंतरिक दमन और एक आक्रामक विदेश नीति ने उन्हें आधुनिक जापानी राज्य की प्रकृति की फिर से जाँच-पड़ताल करने के लिए प्रेरित किया। विविध प्रकार की विस्तृत और विद्वतापूर्ण रचनाएँ लिखी गईं और उनके विचारों को दो व्यापक समूहों में बाँटकर देखा जा सकता था :

- श्रमिक किसान समूह (रोने-हा) पुनर्स्थापना को बुनियादी तौर पर एक बुर्जआ क्रांति के रूप में देखता था, जिसने सामंतवाद का खात्मा करके पूँजीवादी विकास का आधार तैयार किया।
- दूसरा समूह जिसने अपना नाम उनके द्वारा दिए गये व्याख्यानों की शृंखला (कोजा) के नाम से रखा। कोजा समूह का तर्क था कि मेजी पुनर्स्थापना एक सफल पूँजीवादी क्रांति नहीं थी, बल्कि ऐसी क्रांति थी जिसने एक निरंकुश शासन को जन्म दिया। इसका आधार सम्राट व्यवस्था थी और इस व्यवस्था की शक्ति उन सामंती सम्बंधों पर आधारित थी जो ग्रामीण इलाकों में अभी भी जारी रहे।

मार्क्सवादियों ने तर्कों का उनके राजनैतिक कार्यक्रमों से निकट का सम्बंध था। यदि सामंतवाद खत्म हो गया था तो सम्राट से लड़ना आवश्यक नहीं था जिसके कारण पार्टी पर पाबंदी लग जाती। लेकिन यदि सामंतवादी अभी भी महत्वपूर्ण था तो सम्राट व्यवस्था का विरोध करना पड़ता और इसका मतलब भी यही था कि पार्टी पर पाबंदी लगा दी जाती।

एक प्रभावशाली जापानी विचारक किता इक्की (1863-1937) ने पुनर्स्थापना को एक पुनर्स्थापना क्रांति के रूप में देखा जिसमें प्रगतिशील तत्वों के साथ-साथ अतीत की बाधाओं, जो जारी रहीं, दोनों की भूमिका को स्वीकार किया। उन्होंने अपने मत को दृढ़तापूर्वक पेश किया और उनकी रचना पर उसके छपने के तुरंत बाद ही पाबंदी लगा दी गई। उन्होंने नई सोच और उन तत्वों की पहचान की, जिन्होंने राजनीतिक परिवर्तनों से लेकर आधुनिक संविधान की घोषणा तक को जन्म दिया था।

3.13 द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विद्वता

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान में इस पर विवाद जारी रहा है। ई.एच.नोरमेन ने अपनी मार्ग-दर्शक रचना में एक व्याख्या दी जिसने कई विद्वानों को प्रभावित किया है। नोरमेन की दृष्टि में पुनर्स्थापना को 'निम्न समुराई' और व्यापारियों के गठबंधन के नतीजे के रूप में देखा। यह गठबंधन मेजी राज्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह विदेशी विस्तार और आंतरिक केंद्रीयकरण जैसी विशेषताओं के विकास के लिए भी उत्तरदायी रहा। हालांकि अन्य विद्वानों ने विश्लेषण के इस ढाँचे को अपने विस्तृत अध्ययन के आधार पर प्रमाणित मानना कठिन पाया है।

अलबर्ट क्रेग का तर्क है कि 'निम्न समुराई' विश्लेषण के आधार पर अर्थहीन श्रेणी है क्योंकि 'उच्च समुराई' प्रतिशत की दृष्टि से बहुत ही कम था और किसी भी आंदोलन में बड़ी संख्या में निम्न समुराई ही शामिल रहे होंगे। अलबर्ट क्रेग की तरह ही चोशु के हान का अध्ययन करने वाले थॉमस ह्यूबर ने निम्न समुराई को उनकी आय के आधार पर परिभाषित किया है और इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि उसमें साधारण ग्रामीण प्रशासक ही शामिल थे। शिबाहारा ताकाऊजी की दृष्टि से पुनर्स्थापना आंदोलन की प्रेरक शक्ति के रूप में लोकप्रिय सामंती भावनाओं ने काम किया। कॉनरार्ड टाटमेन, हालांकि तर्क देते हैं कि साधारण लोगों ने भी सभी तरफ से भाग लिया और सामंतवाद विरोध को बाकुफू विरोध के समकक्ष रखना सम्भव नहीं है।

जन-असंतोष की भूमिका का वर्णन करना कठिन है। निस्संदेह लोकप्रिय आंदोलन हुए लेकिन, जैसा कि एक अध्ययन इंगित करता है कि उनमें से अनेक आंदोलन उन तोकुगावा क्षेत्रों में हुए, जो बाकुफू विरोधी क्षेत्रों से अधिक सम्पन्न थे। व्यापारियों की भूमिका की भी सावधानीपूर्वक अध्ययन करने की आवश्यकता है। इससे पहले की यह निर्णायक तर्क दिया जाए कि व्यापारी राजभक्ति आंदोलन के समर्थक थे।

मारियस जानसेन ने विदेशी हस्तक्षेप से उत्पन्न वास्तविक खतरे पर सवाल उठाया है; उनका तर्क है कि सरकारें या तो अपना प्रभाव बढ़ाने में रुचि नहीं रखती थी, या फिर इस स्थिति में नहीं थी अपना प्रभाव बढ़ा सकती। फिर भी वह यह मानते हैं कि जापानियों में विदेशी खतरे की संवेदना ने लोगों को कार्यवाही के लिए तैयार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष तौर पर विदेशी ऋण के भय ने इस दौर में और मेजी अवधि में भी एक निर्णायक भूमिका निभाई।

विवाद जारी रहेगा और आवश्यकता इस बात की है कि हम सावधानीपूर्वक और विस्तृत अध्ययन द्वारा वास्तविक प्रक्रिया की अपनी समझ को और अधिक परिष्कृत करें। हालांकि, यह कहा जा सकता है कि तीन प्रमुख क्षेत्र है जिनके इर्द-गिर्द वाद-विवाद घूमता है :

i) पहला यह कि मेजी ईशिन का उदय पश्चिमी साम्राज्यवाद खतरे के विरुद्ध एक रक्षात्मक प्रतिक्रिया के रूप में हुआ।

ii) दूसरा, वास्तविक द्वंद्व सामंतवादी शक्तियों और उभरती पूँजीवादी शक्तियों के बीच था और जिस मेजी राज्य का उदय हुआ वह इन दोनों तत्वों का मिश्रण था।

iii) तीसरा विवाद निम्न समुराई की प्रकृति और भूमिका को लेकर जारी है।

कॉनरेड टाटमेन ने तर्क दिया है कि मेजी पुनर्स्थापना का प्रमुख कारण तोकुगावा बाकुफू का आंतरिक पतन था और यह एक दीर्घकालीन पतन के कारण हुआ जो निरंतर शांति और आर्थिक विकास से जन्मी नई शक्तियों को सही प्रतिक्रिया नहीं दे पाया। टाटमेन की दृष्टि में 1860 के दशक के 'सोन्नाजोई' (सम्राट के प्रति श्रद्धा और बर्बर लोगों को निष्कासन), और 'कोबुगताई' दरबार और बाकुफू में एकता स्थापित करने का कदम जैसे आंदोलन स्वैच्छिक थे लेकिन, उनका तर्क है कि वे देश को एकजुट करने में विफल रहे। उनके विश्लेषण में राष्ट्रीय राजनैतिक विचारों पर जोर दिया गया है और फलस्वरूप वे क्षेत्रीय मामलों और समस्याओं को महत्वपूर्ण नहीं मानते। क्षेत्रों के मामले महत्वपूर्ण तो थे, लेकिन जिस प्रकार का परिवर्तन लाया गया उसमें उनकी कोई निर्णायक भूमिका नहीं थी।

तोकुगावा कालीन जापान के फुदाई दाइम्यों का अध्ययन करने वाले हारोल्ड बोलिथो का दृष्टिकोण इसके विपरीत है। उनका तर्क है कि केंद्रीय सत्ता विकसित नहीं हुई थी, बल्कि कमजोर शोगुन ने हान की शक्ति और मज़बूती को बढ़ा दिया था। क्षेत्रीय जागीरों के हित बाकुफू के अंतिम वर्षों में महत्वपूर्ण बन गये थे। इन हान के हितों को सम्राट के अधीन प्रतीकात्मक नेतृत्व मिल गया। सम्राट के अधीन हानों का यह गठबंधन बाकुफू को चुनौती दे पाया और राजनैतिक परिवर्तन की अपनी माँग को आगे बढ़ा पाया। कोबुगताई आंदोलन इस गठबंधन द्वारा बाकुफू को हटाने का प्रमुख प्रयास था। सोन्नोजोई आंदोलन एक राष्ट्रीय स्तर का आंदोलन था जो निम्न और मध्य स्तर के समुराई को बाकुफू के खिलाफ एक साथ ले आया।

जैसा कि पहले कहा गया है, थॉमस ह्यूबर ने अपने अध्ययन में उस आंदोलन की वर्गीय प्रकृति पर ध्यान केंद्रित किया है जिसने मेजी पुनर्स्थापना को लाने में मदद की। साम्राज्यवादी दबाव को महत्व देने में ह्यूबेर बोलिथो से सहमत हैं लेकिन बोलिथो और टाटमेन दोनों से असहमति व्यक्त करते हुए वह तर्क देते हैं कि बाकुफू विरोधी आंदोलनों में क्षेत्रीय चेतना और राष्ट्रीय चेतना दोनों महत्वपूर्ण नहीं थे। चोशु में ईश्वर का प्रतिशोध (Heavan's revenge) आंदोलन का ह्यूबर का अध्ययन यह बात सामने लाता है कि वर्गीय चेतना और सामाजिक न्याय की इच्छा आंदोलन के पीछे की प्रमुख प्रेरक शक्ति थे। हालांकि ढाँचे के अंदर सुधार लाने के बाकुफु के सुधार परिवर्तनों का ह्यूबर का विश्लेषण कम आशाजनक है। उनकी दृष्टि में बाकुफू बुनियादी तौर पर रूढ़िवादी था और उसमें बदलाव की क्षमता नहीं थी और इस ढाँचें के भीतर सुधारवादियों की स्थिति बहुत गौण थी।

3.14 एक वैश्विक संदर्भ में मेजी पुनर्स्थापना

मेजी पुनर्स्थापना की घटनाओं की छानबीन जापान पर काम करने वाले विद्वानों ने की है, लेकिन दूसरे क्षेत्रों से बहुत कम विशेषज्ञों ने इस घटना को एक व्यापक ढाँचे में रखकर देखने का प्रयास किया है कि कैसे समाजों ने एक आधुनिक राज्य की ओर संक्रमण किया है। यह प्रक्रिया कठिन है और हमेशा सफल भी नहीं हुई है। मैक्सिको में 1910 में एक किसान क्रांति हुई थी जिसे दबा दिया गया, लेकिन वह कई दशक के पूँजीवादी विकास के बाद अभी भी एक अल्पविकसित देश बना हुआ है। दूसरी ओर तुर्की में कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में 1919 में एक राष्ट्रीय रूपांतरण का प्रयास हुआ, लेकिन वह भी विकास नहीं कर सका। एशिया में चीन ने 1911 में गणतंत्र क्रांति की और 1949 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी

सत्ता में आई, लेकिन चीन भी 1970 के दशक के बाद ही औद्योगीकरण कर पाने में सफल हुआ। इस तरह, जापान का मेजी पुनर्स्थापना काल इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने एक गैर-औद्योगीकृत समाज को एक आधुनिक राष्ट्र में बदल दिया। इस घटना को एक बड़ी ऐतिहासिक प्रक्रिया का हिस्सा मानकर विचार किए जाने की आवश्यकता है।

3.15 लोगों को बचाने से उन्हें राज्य की सेवा के लिए लामबंद करने तक

मेजी इशिन वह दौर था जब समाज को उथल-पुथल में झोंक दिया गया था और विचार और सम्बंध अभी तक बाद के 'कुलीन तंत्रीय राज्य' में घुलमिल नहीं पाए थे, और इसलिए उन हितों द्वारा कोई व्यवस्था थोपा जाना छानबीन के क्षेत्र को सीमित करता है और उस अनिवार्यता की ओर संकेत करता है जिसकी छाप जापान पर ऐतिहासिक लेखन में प्रकट होती है। तेत्सुओ नाजिता ने इस बदलाव को उस दृष्टि से देखा है जिस तरह ज्ञान और राजनैतिक व्यवस्था को अनुभव करने वाली विधि में बदलाव आया। तोकुगावा की चिंता के विषय थे ''समाज को व्यवस्थित करना और लोगों को बचाना'' (किसि साइमिन), लेकिन मेजी के लिए मुख्य रुचि 'सम्पन्न देश सशक्त सेना' (फुकोकु कयोहि) हो गई। लोगों को बचाने से उन्हें लामबंद करने का बदलाव मेजी इशिन के साथ आया। यह प्रक्रिया एक लंबे समय तक चली और उसके पहले विवाद और टकराव हुए।

जापान का परिवर्तन ऐसा नहीं था जो सर्वसम्मति और सद्भाव के माध्यम से किया गया था। जब हम इन सवालों पर विचार करते हैं तो जे.डब्ल्यू. हॉल के इस दृष्टिकोण को स्वीकार करना कठिन हो जाता है कि ''जापान ने ऐसी बहुत कम सामाजिक और राजनैतिक विरोधी विचारधाराएँ देखी जो फ्रांसीसी और रूसी क्रांतियों ने देखी'' मेजी पुनर्स्थापना न तो एक बुर्जुआ क्रांति थी और न ही किसान क्रांति, हालांकि शोगुनेत पर हमले का नेतृत्व करने वाले व्यक्तियों में किसान और व्यापारी दोनों पाए गए थे।' रूसी इतिहासकार आई.ए. लेतिसेव ने लिखा है कि 1868-1873 के बीच 200 से अधिक किसान विद्रोह हुए और उनका तर्क है कि पुनर्स्थापना को एक 'अपूर्ण क्रांति' के रूप में देखना कहीं बेहतर होगा। यह याद रखना भी महत्वपूर्ण है कि तोकुगावा घराने की हत्या नहीं की गई थी और यह बरकरार रहा जबकि तोबा और फ्यूशिमी की बाकुफू को नष्ट करने वाली लड़ाइयों में एक लाख बीस हजार सरकारी सैनिक शामिल थे और उसमें से 3556 मारे गये और और 3804 घायल हुए। जब आप इसकी तुलना 1894-95 के चीन-जापान युद्ध से कर सकते हैं जिसमें 5417 सैनिक हताहत हुए, तब आप यह समझ पाएंगे कि यह संघर्ष कितना बड़ा था।

मेजी पुनर्स्थापना की उथल-पुथल का विश्लेषण कई परिप्रेक्ष्यों में किया गया है। एक प्रभावकारी जापानी इतिहासकार इरोकावा दाइकिची ने 'सभ्यता' और 'पश्चिमीकरण' के बीच टकराव पर जोर दिया है। जनता के लोकतांत्रिक संघर्ष पर उनकी रचना ने उन्हें जापानी इतिहास के एक प्रमुख व्याख्याकार के रूप में उन्हें स्थापित किया है। उनका तर्क है कि महान नवीनीकरण (गोइशिन) कहलाने वाली मेजी पुनर्स्थापना में आम लोगों की आशाएँ टूटी और परम्परा से चली आ ही प्रथाओं के मनमाने परिवर्तन के साथ उनका मोह भंग बढ़ गया था और इस निराशा ने किसान विद्रोह जैसी व्यवस्था विरोधी जैसे संघर्षों को हवा दी। यह प्रक्रिया मरूयामा और तेनरि जैसे नये धर्मों की बढ़ी हुई लोकप्रियता में भी प्रकट हुई। ये धर्म स्थापित और अधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त धार्मिक समूहों के बाहर थे और करिश्माई नेताओं के इर्द-गिर्द बने थे।

आधुनिकता की माँगों और आम लोगों की जीवन-शैली के बीच तनाव पुनर्स्थापना के दौरान में और उनके तुरंत बाद होने वाली हिंसक घटनाओं की प्रेरक शक्ति थे।

निष्कर्ष के तौर पर इस बात पर जोर देने की आवश्यकता है कि जहाँ मेजी पुनर्स्थापना ने जापान के लिए एक नये युग की शुरुआत की, वहीं जापान के सफल बदलाव का कारण केवल उसे मिलने वाली मोहलत के कारण नहीं था। पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियों को निस्संदेह चीन के बड़े बाज़ार में अधिक दिलचस्पी थी और उन्हें जापान में कोई बड़ी सम्भावना नहीं दिखाई देती थी। इससे जापान को कई तरह के सुधार करने का अवसर मिला; लेकिन जापान इन सुधारों के बारे में विचार कर पाया और उन्हें लागू कर सका और स्वयं को मिले अवसर का लाभ उठा सका, इसका कहीं बड़ा कारण उसकी आंतरिक मज़बूती और देशी संस्थाएँ थीं।

बोध प्रश्न 2

1) जापान के इतिहास के लिए 1868 की घटनाओं का क्या महत्व था?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) मेजी पुनर्स्थापना की विभिन्न व्याख्याओं क संक्षेप में मूल्यांकन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.16 सारांश

तोकुगावा का पतन नई सामाजिक शक्तियों के निर्माण और इन शक्तियों द्वारा निर्मित तनावों के कारण हुआ। समुराई, व्यापारी और किसानों को बढ़ती समस्याएँ पेश आई, जिनमें से कुछ का कारण बढ़ती हुई उत्पादकता और सम्पन्नता थी। बाकुफू ने अर्थव्यवस्था में दीर्घकालिक परिवर्तन लाने के साथ-साथ नये बौद्धिक रुझानों को प्रोत्साहित किया लेकिन शत्रुतापूर्ण प्रतिकूल अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण ने तोकुगावा के शासन को दुर्बल किया।

उन्नीसवीं शताब्दी का मध्य पश्चिमी साम्राज्यवाद के शिखर का समय था और रूस, ब्रिटेन और फ्रांस इस क्षेत्र में सक्रिय थे। जापान इस जबरदस्त घातक हमले से इसलिए बच गया क्योंकि इन शक्तियों को चीन में अधिक रुचि थी। फिर भी इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि जापान का रूपांतरण साम्राज्यवादी खतरे के तहत ही हुआ था और उसकी प्रतिक्रिया भी विशेष तरीकों से इसी खतरे के अनुकल और इसी की दिशा में बनी। उपनिवेश बनाए जाने का डर, जैसा भारत के अनुभव ने दर्शाया और असमान संधियों के

बोझ ने, उसने विदेशियों को जापानी अधिकार क्षेत्र से परे कर दिया और इसके कारण भारी सीमा शुल्क लगाए गए, इन सबने जापान को एक आधुनिक राष्ट्र राज्य ने बदलने के अभियान को हवा दी।

3.17 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 3.4 और 3.5 देखें।

2) भाग 3.7 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 3.10 देखें।

2) भाग 3.11 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY